विकास नरुला

हिंदी के साथ मेरे प्रयोग

कैरेन यंग केशप

हिंदी, अरबी, उर्दू, चीनी तथा रूसी जैसी मुश्किल भाषा सीखने वाले अमेरिकी राजनयिकों की संख्या बढ़ रही है। मेरा सौभाग्य है कि इस बढ़ते वर्ग में मैं भी सम्मिलित हूं। भारत में अपने राजनयिक उत्तरदायित्व की शुरुआत से पूर्व मैं अमेरिकी विदेश विभाग के विदेश सेवा संस्थान में हिंदी भाषा प्रशिक्षण के लिए गई। हिंदी की अलग लिपि और ध्वनियां हतोत्साहित करती लगती थी। अगले छह महीने हिंदी सीखना ही मेरी जिंदगी बन गई।

पहले दिन हमने हिंदी लिपि सीखने तथा वर्णमाला को याद करने में चार घंटे बिताए। निरुत्साहित करने वाली बात यह थी कि पूरे दिन में मैं केवल चार अक्षरों को ही जान पाई। एक सप्ताह तक मैं एक भी 'स्वर' नहीं सीख सकी! तीन सप्ताह में मैंने वर्णमाला सीखी। हमारे शिक्षक उत्तर प्रदेश, दिल्ली, गुजरात तथा पंजाब के अनिवासी भारतीय थे। उन्होंने कक्षा में हिंदी-समाचार पत्रों को पढ़ने तथा उन सरल शब्दों को पहचानने को कहा जिनसे हम परिचित थे। इन शुरुआती हफ्तों में मैं एक तरह से हिंदी में क्रैश कोर्स कर रही थी और कक्षा से सिरदर्द लेकर बाहर आती।

जैसे-जैसे हमारी जानकारी बढ़ी, हमने रामायण, कृषि, लैंगिक समस्याओं, संस्कृति, मौसम, अपराध, राजनीति, एचआईवी/एड्स, शॉपिंग, आतंकवाद, यातायात और खाने-पकाने सहित बहुत से विषयों पर बातचीत की। हमने पारिवारिक सदस्यों जैसे चाचा, चाची, पिता के बड़े भाई के पुत्र के हिंदी संबोधनों को सीखा और आखिर में भारतीयों द्वारा प्राय: अपने संबंधियों- मौसीजी, सालीजी एवं दादीजी सहित विभिन्न संबोधनों से पुकारने जाने के बारे में पारिवारिक वंशवृक्ष का सहारा लिया।

इसके बाद कक्षा में सजाई गई सामग्री पर ध्यान दिया गया। भारतीय प्राइमरी पाठशाला के चार्टों से हमें फलों, वनस्पतियों, शारीरिक अंगों, भौगोलिक विशेषताओं, तथा पशुओं के नामों की जानकारी हुई। एक दिन हमारी शिक्षिका शहर का एक बड़ा मानचित्र लेकर आईं। उन्होंने हमें चिड़ियाघर से होटल तक के लिए हिंदी में रास्ता बताने के लिए कहा। इसमें बाएं और दाएं मुड़ने या पुल पार करने के बारे में बताना शामिल था। उन्होंने प्लास्टिक के एक नारंगी घोड़े (कक्षा में सबका पसंदीदा) को पूरे मानचित्र पर घुमाया। हम रेलवे स्टेशन पर रुके और पुल के लिए शब्द भूल गए तो हमें नदी में तैरना पड़ा। आखिर में होटल पहुंचकर यह यात्रा समाप्त हुई। भारत में यह ज्ञान बहुत उपयोगी साबित हुआ है- विशेषकर शहर में टैक्सी वालों को रास्ता बताने में।

हमारी शिक्षिका हमें मंदिर, मस्जिद, परचून की दुकानों तथा रेस्तराओं और सबसे नई बॉलीवुड फिल्मों को प्रदर्शित करने वाले स्थानीय सिनेमाघरों में ले गए। हिंदी बोलने वालों से अमेरिका और भारत में उनके जीवन के बारे में इंटरव्यू लेने सहित प्रत्येक फील्ड दौरे में हमने हिंदी में कामकाज किया। इन सभी अनुभवों से हिंदी बोलने का आत्मविश्वास पैदा होने

ग्राफिक: कासिम रजा

के साथ ही भारतीय संस्कृति तथा मूल्यों की जानकारी में बढ़ोतरी हुई।

छह महीने तक हिंदी सीखना ही मेरा काम था जिससे इस भाषा पर ध्यान केंद्रित करना और भारतीय संस्कृति के पक्षों को आत्मसात करना आसान हो गया। हर सप्ताह हिंदी, उर्दू, बांग्ला, नेपाली, तमिल, मलयालम तथा पश्तों शिक्षकों द्वारा एक सम्मिलित दावत होती थी। भारतीय खाने के बारे में सीधे-सीधे जानने के लिए हम दोपहर के खाने पर एक शिक्षक के घर पर भी गए और अपनी मेहनत से बने व्यंजनों का लंच में मजा लिया।

जब मेरे शिक्षक ने मुझसे दक्षिण एशियाई भाषा विभाग के वार्षिक मेले में भाग लेने के लिए कहा तो मुझे पता चला कि मेरा अध्ययन सफल हो रहा है। साड़ी पहनकर और दीया हाथ में लेकर मैंने विदेशी राजनयिकों तथा भाषा विद्यार्थियों को दीवाली के बारे में बताया। अन्य छात्रों ने पारंपरिक पंजाबी नृत्य किया, मेंहदी लगाई, गाने गाए तथा मेले में आने वालों को तिलक लगाकर शुभकामानाएं दीं।

हिंदी सीखना एक चुनौती थी और अब इससे होने वाले लाभों का सिलसिला जारी है। हिंदी बोलना मेरे लिए बहुत ही उपयोगी रहा है। इससे मैं रेडियो और टेलीविजन प्रसारण को समझ सकती हूं तथा अनुवाद का इंतजार किए बिना मैं नवीनतम खबरों पर निगाह रख सकती हूं। मैं उन भारतीयों के साथ कामकाज कर सकती हूं जिनके साथ हिंदी की जानकारी के बिना ऐसा करना मुश्किल होता। मैं कुछ-कुछ अंग्रेजी बोलने वालों से भी उनकी मातृभाषा में बात कर सकती हूं। मैं जब यहां आई और सहकर्मियों को पता चला कि मैं उनकी भाषा में बात कर सकती हूं तो जल्दी ही उनके साथ घुल-मिल गई। मेरे साथी मेरी उपस्थिति में दूसरे लोगों के बारे में मजाक करते हैं, तब मैं उन्हें सिर्फ यही बताती हूं कि यहां जो कुछ भी कहा गया है, वह मैं सब समझती हूं।

जब मेरा परिवार जुलाई में भारत आया तो छह महीने के हिंदी ज्ञान ने मेरी बहुत सहायता की। मुझे यह अजनबी जगह नहीं लगी और न ही मुझे ज्यादा सांस्कृतिक अलगाव का सामना करना पड़ा। भाषा और संस्कृति के ज्ञान ने मुझे और प्रभावी राजनयिक बना दिया तथा मेरे लिए विशाल, प्राचीन तथा मिश्रित संस्कृति की खोज के द्वार खोल दिए। अमेरिकी विदेश विभाग द्वारा पेश किए गए अवसर के द्वारा बहुत से अन्य अमेरिकी राजनयिकों ने भी भारतीय भाषा और संस्कृति को सीखने में समय लगाया है। भाषा सीखने का ऐसा अवसर हमें ज्यादा उदार बनाता है तथा भरोसे और समझ के सेतुओं का निर्माण करता है। राष्ट्रपति का *नेशनल सिक्यूरिटी लैंग्वेज इनीशिएटिव* मेरे जैसे बहुत-से और लोग तैयार करेगा- साधारण अमेरिकी जो हिंदी जानते, बोलते और समझते हों। □

लेखिका: *कैरेन यंग केशप अमेरिकी दूतावास में सहायक सूचनाधिकारी हैं।*

विदेशी भाषाओं के लिए राष्ट्रपति बुश की पहल

टाइलर वाकर विलियम

राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा पहल के तहत अमेरिका के ज्यादा से ज्यादा नागरिकों को देश की सुरक्षा के लिहाज से अहम कुछ विदेशी भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके तहत अमेरिकी ससंद से 11 करोड़ 40 लाख डॉलर की राशि मंजूर करने का आग्रह किया जा रहा है।

संभव है कि कुछ सालों बाद हिंदी-भाषी अमेरिकी उतनी दुर्लभ चीज न रह जाए। दूसरे देशों के लोगों से बेहतर संवाद कायम करने की दिशा में अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश द्वारा जनवरी में की गई खास पहल से यह परिवर्तन आने की उम्मीद लगाई जा रही है। राष्ट्रपति ने नेशनल सिक्यूरिटी लैंग्वेज इनिशिएटिव (एन.एस.एल.आई. यानी राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा पहल) की घोषणा की है जिसके तहत अमेरिका के नागरिकों को देश की सुरक्षा के लिहाज से ज्यादा अहम कुछ विदेशी भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इनमें हिंदी के अलावा उर्दू, रूसी, चीनी, अरबी और फारसी शामिल हैं।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय के अनुसार राष्ट्रीय सुरक्षा भाषा पहल के लिए अमेरिकी संसद यानी कांग्रेस से 11 करोड़ 40 लाख डॉलर मंजूर करने का आग्रह किया जाएगा। राष्ट्रपति बुश का मानना है कि किसी भी देश में प्रभावी संवाद के लिए उसकी स्थानीय भाषा में बातचीत करना महत्वपूर्ण है क्योंकि ऐसा करने पर लोग यह समझते हैं कि आप वाकई उनमें दिलचस्पी दिखा रहे हैं।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मामलों की प्रभारी सहायक विदेश मंत्री डीना पॉवेल ने एनएसएलआई का विस्तृत ब्यौरा जारी करते हुए बताया, ''अमेरिकी नागरिकों को विदेशी भाषाओं की कम जानकारी होने के कारण दूसरे देशों में अमेरिका के राजनीतिक, आर्थिक तथा सुरक्षा संबंधी हितों को ठेस पहुंचती है। इस कमी के चलते दूसरे देशों के मीडिया के साथ बेहतर तरीके से तालमेल बिठाने में भी मुश्किल आती है, आतंकवाद-विरोधी प्रयासों को नुकसान पहुंचता है और संघर्ष में उलझे क्षेत्रों में जनता और सरकारों के साथ काम करने की अमेरिका की क्षमता प्रभावित होती है।'' विदेश मंत्रालय के अनुसार अहम विदेशी भाषाओं को सीखना अमेरिका के हितों को मजबूत करने के अतिरिक्त दूसरे देशों की जनता तथा सरकारों से संवाद करने, उनकी संस्कृतियों तथा परंपराओं को समझने और अमेरिकी जीवन-पद्धति और विश्व-दृष्टि का बेहतर ढंग से प्रसार-प्रचार करने के लिए जरूरी है।''

भाषा पहल के प्रस्ताव के तीन मुख्य लक्ष्य हैं : जरूरी विदेशी भाषाओं को बचपन से सीखने वाले अमेरिकी लोगों की

संख्या में इजाफा, जरूरी विदेशी भाषाओं में दक्ष लोगों की संख्या में वृद्धि और जरूरी विदेशी भाषाओं के शिक्षकों तथा संसाधनों की संख्या में बढ़ोतरी। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षा व्यवस्था में नई शुरुआत का प्रस्ताव है। इसके तहत विश्वविद्यालयों में जरूरी भाषाओं के अध्ययन के लिए बजट को बढ़ाया जाएगा।

कोलंबिया यूनिवर्सिटी में हिंदी के प्रोफेसर जैक हॉली कहते हैं, ''अगर अमेरिकी संसद ने प्रस्ताव को मंजूर कर लिया तो अमेरिका के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन की गुंजाइश बहुत बढ़ जाएगी।'' प्रोफेसर हॉली के अनुसार, ''मुझे प्राथमिक स्कूलों में विदेशी भाषाओं के कार्यक्रम की बात बहुत दिलचस्प लगती है। अगर ऐसा कार्यक्रम सही तरीके से लागू किया जाए तो बड़ी सफलता की बात होगी।'' हिंदी अध्यापन कार्य से जुड़े बहुत-से अन्य लोगों का मानना है कि प्रस्ताव का एक परिणाम यह हो सकता है कि भारत में हिंदी सीखने आने वाले अमेरिकियों और अमेरिका में हिंदी पढ़ाने आने वाले भारतीयों की संख्या बढ़ जाए।

प्रस्ताव का सबसे अहम हिस्सा स्कूली शिक्षा से संबंधित है। प्रस्ताव के अनुसार पूरे अमेरिका में पहली कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक जरूरी भाषाओं के अध्ययन के लिए एक कार्यक्रम बनाया जाएगा जिसमें शिक्षक और छात्र दोनों को उस भाषा की शिक्षा मिलेगी। दो करोड़ 70 लाख डॉलर की मदद से के.जी. से शुरू होकर विश्वविद्यालय स्तर तक अहम भाषाओं की पढ़ाई के कार्यक्रम चलाएं जाएंगे। अगले साल से यह 27 स्कूलों में शुरू होगा। इसके अलावा, हर साल गर्मियों की छुट्टियों में इन अहम भाषाओं को पढ़ने के लिए 275 अमेरिकी छात्र दूसरे देशों में भेजे जाएंगे। वर्ष 2006-07 में अहम भाषाओं के 300 मूल जानकारों को अमेरिकी स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाने के लिए बुलाने को विदेश मंत्रालय के फुल्ब्राइट विदेशी भाषा अध्यापन सहायता कार्यक्रम का विस्तार किया जाएगा। वर्ष 2009 तक सैकेंडरी स्कूलों के छात्रों को विदेशी भाषा पढ़ने के लिए 3,000 स्कॉलरशिप दी जाएंगीं। यह लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है कि 2011 तक 3,000 शिक्षकों और 3,000 छात्रों को विशेष कार्यक्रमों के द्वारा ऐसी भाषाओं की शिक्षा मिलेगी जो आमतौर पर नहीं पढ़ी जाती हैं।

अमेरिकी और भारतीय छात्र आमतौर पर महसूस करते हैं कि एन.एस.एल.आई. जैसे बड़े कार्यक्रम से दूसरे देशों में काम करने वाले अमेरिकी अधिकारी ज्यादा सक्षम हो पाएंगे। इससे शैक्षिक, सांस्कृतिक और अन्य क्षेत्रों में सहयोग में भी इजाफा होगा। नई दिल्ली में अमेरिकी दूतावास की राजनीतिक अधिकारी कोर्टनी क्रेमर के अनुसार किसी भी देश में ज्यादा से ज्यादा लोगों से प्रभावी तरीके से संपर्क करने के लिए अमेरिकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्थानीय भाषा सीखना जरूरी है। वह कहती हैं, ''स्थानीय भाषा में बात करने पर वे अमेरिकी नीतियों के बारे में ज्यादा बेहतर तरीके से बता सकते हैं।'' भारत आने से पहले उन्होंने छह महीने तक हिंदी पढ़ी। उनके अनुसार, ''भारत में लोगों को अमेरिकी नजरिये के बारे में बताने में हिंदी बहुत काम आती है। जब आप हिंदी में बोलते हैं तो लोग और ज्यादा आसानी से आपसे जुड़ते हैं और आपका और ज्यादा आदर-सत्कार करते हैं।'' □

हेमंत भटनागर

टाइलर वाकर विलियम अपनी पुस्तकों के साथ: हिंदी से शुरू से ही लगाव टाइलर को भारत लेकर आ गया। इससे पहले उन्होंने वास्तुविद बनने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया लेकिन मन नहीं लगा।

वर्ष 2006-07 में अहम भाषाओं के 300 मूल जानकारों को अमेरिकी स्कूलों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाने के लिए बुलाने का प्रस्ताव है। इसके लिए फुल्ब्राइट विदेशी भाषा अध्यापन सहायता कार्यक्रम का विस्तार किया जाएगा।

लेखक: *टाइलर वाकर विलियम अमेरिकी नागरिक हैं और दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.फिल. कर रहे हैं। इससे पहले वह इसी विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. कर चुके हैं।*